पीएच०डी० शोध-प्रारूप

नागपुरी गद्य साहित्य का उद्भव और विकास : एक अध्ययन

विश्वविधालय नागपुरी विभाग, राँची विश्वविधालय, राँची से
पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रारूप की रूपरेखा
संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
वर्ष : 2024

शोध निर्देशक
डॉ० किशोर सुरिन
सहायक प्राध्यापक
विश्वविधालय मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविधालय, राँची।

शोधार्थी
रश्मि शिखा कुमारी
एम.ए.नागपुरी
यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ
विश्वविधालय नागपुरी, विभाग
राँची, विश्वविधालय, राँची।

भूमिकाः-

नागपुरी झारखण्ड की प्राचीन भाषाओं में से एक है। यह झारखण्ड की प्रमुख भाषा है। नागवंश के शासन काल में नागपुरी उनकी राज-भाषा थी। छोटानागपुर क्षेत्र में दीर्घ काल से यह राजकाज एवं प्रधानों की भाषा रही है। नागपुरी का छोटानागपुर में वही महत्व है, जो महत्व भारतवर्ष में हिन्दी का है। नागपुरी के कई नाम प्रचलित हैं, जैसेः- नागुपरी, नगपुरिया, नागपुरिया, सदानी, सदरी, गउली, गँवारी आदि। सन्दर्भ संगति की दृष्टि से इनमें प्रथम तीन-नागपुरी, सदानी और सदरी अधिक सार्थक है।

नागपुरी भाषा का विस्तार झारखण्ड के अलावा पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे जिलों के अलावा असम के चाय-बगानों व अण्डमान-निकोबार के क्षेत्र तक है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में छोटानागपुर क्षेत्र के लोग काम की तलाश में गए तथा अपने साथ नागपुरी भाषा तथा संस्कृति को साथ लेकर गए, यही कारण है कि वर्तमान समय में दिल्ली, कोलकाता, चेनई, मुबई जैसे बड़े-बड़े नगरों व महानगरों के अलावा फिजी, अमेरिका, कनाड़ा जैसे विदेशी मुल्कों में भी इस भाषा की पहुँच है।

वर्तमान समय में नागपुरी भाषा का सहित्य-भण्डार अति समृद्ध है। इसका साहित्य वैविध्यपूर्ण एवं विपुल है। किसी भी भाषा का साहित्य उस भाषा क्षेत्र के समाज का सूर्यपूंज होता है, जिसमें सामाजिक जीवन के हर पहलू का वर्णन होता है।

साहित्य वह है, जिसमें सभी के हित का भाव हो अर्थात्, संपूर्ण चराचर जगत में हम जो देखते हैं, सुनते हैं, समझते हैं, सबके प्रति प्रेम, करूणा, सबके कल्याण की भावना के बारे में सोचना, समझना, देखना इत्यादि जो अच्छी भावनाएँ हैं, वे साहित्य में आते हैं। बाकी सभी विषयों में हम तथ्यों का अध्ययन करते हैं, लेकिन साहित्य ऐसा विषय है, जो जीवन से जुड़ा होता है। यह मानव जीवन जीने का विवेक देता है तथा मानव चेतना को जागृत करता है तथा मनुष्य को संवेदनशील बनाता है।

साहित्य के दो प्रकार होते हैं- पद्य साहित्य तथा गद्य साहित्य। पद्य साहित्य के अंतर्गत हम अपने विचारों को काव्य शैली में प्रस्तुत करते हैं। इसके उदाहरण गीत, कविता, गजल, दोहा, पद हैं। किसी भी साहित्य की शुरूआत पद्य साहित्य से होती है। गद्य साहित्य में हम अपने भावों तथा विचारों को सहज सरल एवं सामान्य भाषा का प्रयोग कर व्यक्त करते हैं। इस विधा का उदाहरण-कहानी, लेख, जीवनी, संस्मरण, पत्र, उपन्यास, नाटक, यात्रा वृत्तांत आदि हैं।

गद्य, छन्द, ताल, लय एवं तुकबन्दी से मुक्त तथा विचारपूर्ण एवं वाक्यबद्ध रचना होती है। गद्य शब्द ‘‘गद् ‘ ‘ धातु के साथ ‘यत् ‘ प्रत्यय जोड़ने से बना है। गद् का अर्थ होता है- बोलना, बतलाना या कहना। सामान्यतः दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली बोल-चाल की भाषा में गद्य का ही प्रयोग किया जाता है। गद्य का लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल एवं सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित सम्प्रेषित करना है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर कथा-साहित्य आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम साधारण व्यवहार की भाषा गद्य ही है, जिसका प्रयोग सोचने, समझने, वर्णन या विवेचन आदि के लिए होता है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल गद्य के रूप में व्यक्त भी कर सकता है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपयोगिता और महत्व में वृद्धि होती जा रही है। किसी कवि या लेखक के हृदयगत भावों को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। और ‘गद्य' ज्ञान-वृद्धि का एक सफल साधन है। गद्य का विकास होने पर अन्य भाषाओं के साहित्य की तरह नागपुरी भाषा साहित्य का चहुमुखी उन्नति भी संभव हो सका है।

वर्तमान समय में नागपुरी गद्य साहित्य काफी उन्नत तथा विकासशील अवस्था में है, लेकिन नागपुरी गद्य साहित्य के विकासक्रम को दिखाना असभंव नहीं तो कठिन अवश्य है। नागपुरी लोक साहित्य की मौखिक परम्परा तो काफी प्राचीन है, परन्तु लिखित और प्रकाशित साहित्य के अभाव में नागपुरी साहित्य का उद्भव कब हुआ, यह निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता है।

सामान्यतः किसी भी भाषा-साहित्य का लेखन पद्य से ही प्रारंभ होता है। जिस प्रकार हिन्दी साहित्य में कई सदियों तक पद्य ही लिखा जाता रहा, उसी प्रकार नागपुरी साहित्य में कई सदियों तक लागतार गीतों तथा कविताओं की रचना होती रही। स्वतंत्रता पूर्व नागपुरी में गद्य साहित्य का नितांत अभाव दिखाई

देता है। शिलालेख गधों को छोड़ दिया जाय, तो नागपुरी गद्य का उद्भव अधिक से अधिक आज से 101 वर्ष अर्थात् 1896 ई में प्रकाशित फा. ई. एच व्हिटली का व्याकरण ‘‘नोट्स ऑन दी गँवारी डायलेक्ट ऑफ लोहरदगा छोटानागपुर’ ’ माना जा सकता है। जो कि नागपुरी का पहला व्याकरण है।

आजादी के पूर्व का नागपुरी गद्य साहित्य अप्राप्य है, इसलिए भी पाठकों को लाभ नहीं मिलता। फिर भी, जो साहित्य मिलता है उसका ऐतिहासिक महत्व है। इसी साहित्य के आधार पर स्वतंत्रता के बाद का साहित्य विकसित हुआ है। नागपुरी लोक कथाओं और अनूदित साहित्य की जड़ से ही धीरे-धीरे मौलिक लेखन विकसित हुआ है। इस मायने में नागपुरी लोक कथाएँ, शिष्ट कथाओं की जननी है। स्वतंत्रता पूर्व नागपुरी गद्य के नमूनों से ही स्वतंत्रता की बाद वाली पीढ़ी अपना मौलिक लेखन प्रारंभ कर सकी है, इसलिए आने वाली पीढ़ी के लिए नागपुरी गद्य के ये नमूने बड़े महत्व के हैं।

शोध की प्रेरणाः-

कोई भी शोध कार्य को सफल बनाने में प्रेरणा का प्रमुख योगदान होता है। प्रेरणा हमें बताता है कि हम कोई भी कार्य क्यों करते हैं। यह मानवीय कार्यों के पीछे प्रेरक शक्ति है। प्रेरणा वह प्रक्रिया है जो लक्ष्य-उन्मुख व्यवहारों को आरंभ करती है, मार्गदर्शन करती है और उन्हें बनाए रखती है। हमारी प्रेरणा ही हमें कोई कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, जो हमें अपने लक्ष्यों के करीब ले जाती है।

मैं मूल रूप से झारखण्ड प्रांत के गुमला जिले की रहने वाली हूँ। बचपन में मैंने अपने दादा-दादी, नाना-नानी तथा अन्य बड़े बुजुर्गो से नागपुरी लोककथाएँ सुनी तथा उनको सुनकर बड़ी हुई। बड़े होने के क्रम में वे सारी कहानियाँ मेरे मन के किसी कोने में थी, जो समय के साथ धूमिल होती जा रही थी। जब स्नातकोत्तर के दौरान मुझे नागपुरी साहित्य को पढ़ने का अवसर मिला तो मैंने उस दौरान नागपुरी साहित्य के गद्य तथा पद्य का अध्ययन किया। चूंकि मुझे बचपन से कहानियाँ सुनने तथा पढ़ने में ज्यादा रूचि थी, इसी कारण मेरा झुकाव नागपुरी गद्य साहित्य की ओर ज्यादा रहा। अपने स्नातकोत्तर के दौरान मैंने गद्य साहित्य में, कहानी, नाटक, उपन्यास तथा अन्य विधाओं का अध्ययन किया। उन कहानियों, नाटकों

तथा उपन्यासों को पढ़कर मुझे एक प्रकार का लगाव तथा अपनापन सा लगा, मानों ये मेरे आस-पास, मेरे अपने समाज की ही किस्से कहानियाँ हैं। स्नातकोत्तर की पढ़ाई के दौरान मैंने नागपुरी साहित्य का विस्तृत परिचय प्राप्त किया। मेरे गुरूजन प्रो॰ नईम खान और डॉ॰ मनोहर प्रसाद साहु तथा शोध निर्देशक डॉ॰ किशोर सुरिन एवं नागपुरी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ॰ सविता केशरी ने इस शोध को करने के लिए मुख्य रूप से मुझे प्रेरित किया।

उदेश्यः-

1. नागपुरी भाषा एवं साहित्य से परिचय प्राप्त करना।
2. नागपुरी गद्य साहित्य के विकास में नवीन कड़ी को जोड़ना।
3. नागपुरी के अज्ञात गद्य साहित्य को समाज के सामने लाना।
4. नागपुरी भाषा साहित्य के विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभाना।
5. नागपुरी गद्य विधा के रचनाकारों को संकलित करना।
6. शोध कार्य के माध्यम से नागपुरी के गद्य साहित्य के विशेषताओं को प्रकाश में लाना।
7. नागपुरी गद्य विधा को अधिक पल्लवित व सार्थक सिद्ध करने के लिए निर्णय लेते हुए सहयोग देना।
8. नागपुरी गद्य विधा के माध्यम से सफल लेखनी की ओर समाज को अग्रसर करना।

शोध की विधिः-

प्रस्तावित शोध के लिए निम्नलिखित शोध विधियों का आधार लिया जायेगाः-

1. वर्णनात्मक विधि
2. प्रश्नावली विधि

3. **तुलनात्मक विधि**

4. **विश्लेषणात्मक विधि**

5. **आलोचनात्मक विधि**

6. **विवरणात्मक विधि**

शोध की सामग्रीः-

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता होगीः-

- **पुस्तकें**
- **पत्र-पत्रिकाएँ**
- **कम्प्यूटर**
- **वेबसाईट/इंटरनेट**
- **अवलोकन एवं मूल्यांकन**
- **मीडिया क्लीपिंग**
- **इसके अलावा समाचार पत्र, पेंसिल, कागज और भी आवश्यकतानुसार वैसी शोध सामग्रियों का सहारा लूंगी, जो इस कार्य के दौरान आवश्यक होगा। वैसी आवश्यकताओं की पूर्व की कल्पना संभव नहीं, लेकिन इस समस्त कार्यां में समय-समय पर अपने शोध निर्देशक से निर्देश लेती रहूँगी।**

शोध का महत्वः-

शोध प्रत्येक मानव ज्ञान में अभिवृद्धि और प्रत्येक समाज व राष्ट्र के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। किसी भी विषय क्षेत्र में शोध के बिना प्रगति और विकास संभव नहीं है। शोध ज्ञान भण्डार को विकसित एवं परिमार्जित करता है। शोध पूर्वाग्रहों के निदान और निवारण में सहायक होता है।

प्रस्तावित शोध का समाज पर प्रभावः-

प्रस्तुत शोध कार्य पूरा होने तथा प्रकाशित होने से समाज पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ सकता हैः-

1. **प्रस्तावित शोध ''नागपुरी गद्य साहित्य का उद्भव और विकास : एक अध्ययन ' ' पद्य विधा से गद्य की ओर नवीन लेखन शैली से नए रचनाकारों को प्रभावित करेगी।**

2. **वैसे नए रचनाकार जिनके मनोवृत्ति में लेखन के अमूर्त रूप होते हैं, वैसे रचनाकार विभिन्न विषयों को लेकर गद्य विधा में रचनाएँ करेंगे।**

3. **समस्त विधार्थी एवं शोधार्थी तथा सभी पाठक वर्ग नागपुरी के गद्य विधा का रसास्वादन कर पायेंगे।**

4. **यह शोध आने वाले समय में शोधार्थियों तथा पाठकों को नागपुरी गद्य साहित्य को और गहराई से जानने में सहायता प्रदान करेगा।**

शोध की समस्याः-

किसी भी क्षेत्र में शोध कार्य करने के लिए अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मेरे शोध का विषय ''नागपुरी गद्य साहित्य का उद्भव और विकास : एक अध्ययन ' ' है, इसके लिए मुझे कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। नागपुरी गद्य साहित्य को समझने के लिए मुझे इसका गहन अध्ययन करना होगा तथा विभिन्न रचनाकारों की रचनाएँ पढ़ना तथा समझना होगा। शोध कार्य करते समय अनेकों प्रकार की समस्याएँ होती हैं- जैसे समय की समस्या, पैसे की समस्या, वाहन की समस्या, शोध विषय को समझने, उसकी समस्याओं का निवारण के लिए मुझे नागपुरी साहित्य के विशेषज्ञों ने बहुत सहायता प्रदान की।

शोध की परिकल्पनाः-

परिकल्पना किसी भी शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। हम किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके बारे में परिकल्पना करते हैं। परिकल्पना शोध समस्या

से संबंधित समस्त संभावित समाधानों पर विचार करना है। परिकल्पना से यह ज्ञात होता है कि शोधकार्य में कौन-कौन सी क्रियायें करनी है और कैसे करनी है।

शोध कार्य में परिकल्पना का बहुत महत्व है। यह शोधकर्ता को निष्पक्षता से शोध कार्य में सक्षम बनाता है। यह शोधार्थी को शोध कार्य करने में दिशा प्रदान करता है। परिकल्पना शोध में सिद्धांतों तथा व्यवहार को जोड़ता है तथा सिद्धांतों और वास्तविकता के बीच पुल का कार्य करता है।

अध्याय क्रमः-

प्रथम अध्यायः-

नागपुरी साहित्य का सामान्य परिचयः-

क. पद्य विधा

ख. गद्य विधा

द्वितीय अध्यायः-

नागपुरी गद्य साहित्य का काल निरूपण

(क) प्रारंभिक काल

(ख) मध्य काल

(ग) आधुनिक काल

तृतीय अध्यायः-

गद्य की विधाओं का सामान्य परिचय

(क) कहानी

(ख) नाटक

(ग) एकांकी

(घ) उपन्यास

(ङ.) निबंध

(च) रिपोर्ताज

(छ) यात्रा-वृत्तांत

(ज) आत्मकथा और जीवनी

(झ) रेखाचित्र और संस्मरण

(ञ) आलोचना

चतुर्थ अध्यायः-

नागपुरी कथा साहित्य का विकास

(क) नागपुरी के प्रमुख कहानीकार एवं उनकी रचनाएँ।

(ख) नागपुरी के नवीन कहानीकार एवं उनकी रचनाएँ।

पंचम् अध्यायः-

नागपुरी उपन्यास का विकास

(क) नागपुरी के प्रमुख उपन्यासकार एवं उनकी रचनाएँ।

(ख) नागपुरी के नवीन उपन्यासकार एवं उनकी रचनाएँ।

षष्ठ अध्यायः-

नागपुरी नाट्य साहित्य का विकास

(क) नागपुरी के प्रमुख नाटक एवं उनका विश्लेषण

(ख) नागपुरी के नवीन नाटकों का विश्लेषण

सप्तम् अध्यायः-

नागपुरी के अन्य गद्य विधाओं का विकास

(क) व्याकरण

(ख) **शब्दकोश**

(ग) **निबंध**

(घ) **आलोचना**

(ङ.) **यात्रा-वृत्तांत**

(च) **रिपोर्ताज**

(छ) **आत्मकथा और जीवनी**

(ज) **रेखाचित्र और संस्मरण**

उपसंहार/शोध निष्कर्ष

परिशिष्टः-

1. **आधार ग्रंथ सूची**
2. **संदर्भ ग्रंथ सूची**
3. **पत्र पत्रिकाओं की सूची**

नोटः- शोध कार्य के समय आवश्यकतानुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक
डॉ० किशोर सुरिन
सहायक प्राध्यापक
विश्वविधालय मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविधालय, राँची।

शोधार्थी
रश्मि शिखा कुमारी
एम.ए.नागपुरी
यू.जी.सी.नेट/जे.आर.एफ
विश्वविधालय नागपुरी, विभाग
राँची, विश्वविधालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूची

क्र.स	लेखक	रचना	प्रकाशक	वर्ष
1.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा उद्गम् और विकास	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची	2000
2.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा और साहित्य	कमल प्रकाशन कोतवाली रोड,	1971
3.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	छोटानागपुर का इहितास : कुछ सूत्र, कुछ संदर्भ	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची	1979
4.	गोस्वामी, डॉ० श्रवण कुमार	नागपुरी शिष्ट साहित्य	रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल सांइस	1972
5.	गोस्वामी, डॉ० श्रवण कुमार	नागपुरी भाषा	विहार राष्ट्र भाषा परिषद् (पटना)	1976
6.	तिवारी, डॉ० उमेश नन्द	आधुनिक नागपुरी साहित्य	झारखण्ड झरोखा	2014
7.	महतो, डॉ० बीरेन्द्र कुमार	नागपुरी भाषा : अतीत आउर वर्तमान	शिवांगन पब्लिकेशन, पटना	2019
8.	विधि, ज्ञानोत्तम	नागपुरी कर साहितिक निंबध	झारखण्ड झरोखा	2012
9.	साहु, डॉ० अंजू	नागपुरी नाट्य साहित्य का उद्भव और विकास	झारखण्ड झरोखा	2018

संदर्भ ग्रथों की सूची

क्र.स	लेखक	रचना	प्रकाशक	वर्ष
1.	अनुज, डॉ० भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	जय भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद	1992
2.	आचार्य, रामचंद्र शुक्ल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर	1929
3.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	साहित्य के तत्व और आयाम	झारखण्ड झरोखा, राँची	1971
4.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी कवि और उनका काव्य	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची	2014
5.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	कांटी (कहानी संग्रह)	झारखण्ड झरोखा	1996
6.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	रेडियो ले दू ठो (नागपुरी नाटक)	नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची	2006
7.	केशरी, डॉ० विसेश्वर प्रसाद	ठाकुर विश्वनाथ शाही (नागपुरी नाटक)	नागपुरी भाषा परिषद्	1969
8.	गौंझू, डॉ० गिरिधारी राम	झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत	झारखण्ड झरोखा	2016
9.	गौंझू, डॉ० गिरिधारी राम	हीरानागपुर कर हीरा (नागपुरी एकांकी-नाटक संग्रह)	झारखण्ड झरोखा	2012

10.	**गौंझू, डॉ० गिरिधारी राम**	**अखरा निंदाए गेलक (नाटक)**	**जनजातीय भाषा अकादमी**	1990
11.	**गौंझू, शंकर लाल**	**पुगरी (उपन्यास)**	**मार्गदर्शन पब्लिकेशन**	2018
12.	**चौधरी, शिव अवतार**	**असुर कन्या**	**पझरा प्रकाशन**	2004
13.	**चौधरी, शिव अवतार**	**महादान**	**पझरा प्रकाशन**	2003
14.	**डॉ० सतेन्द्र**	**लोक साहित्य स्वरूप एवं सर्वेक्षण**	**भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर**	1982
15.	**दास, डॉ० श्याम सुन्दर**	**साहित्यालोकन**	**लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद**	2017
16.	**प्रसाद, डॉ० राम**	**स्वातंत्रोत्यर नागपुरी साहित्य**	**झारखण्ड झरोखा, राँची**	1992
17.	**बड़ाईक, बालमुकुन्द**	**चकरी (उपन्यास)**	**झारखण्ड झरोखा**	1979
18.	**महतो, डॉ० बीरेन्द्र**	**नागपुरी भाषा व्याकरण : एक अध्ययन**	**शिवांगन पब्लिकेशन**	2012
19.	**मिश्र, डॉ० शुकुन्तला एवं तिवारी, डॉ० उमेश नन्द**	**एक चकता रउद (कहानी संग्रह)**	**झारखण्ड झरोखा**	2012
20.	**मिश्र, डॉ० शुकुन्तला एवं तिवारी, डॉ० उमेश नन्द**	**बनकेवरा (नागपुरी गद्य-पद्य संकलन)**	**झारखण्ड झरोखा**	2012

21.	**मिश्र, डॉ० शुकुन्तला एवं तिवारी, डॉ० उमेश नन्द**	**नागपुरी (सदानी) व्याकरण**	**झारखण्ड झरोखा**	2010
22.	**मिश्र, डॉ० शुकुन्तला**	**सातो नदी पार (उपन्यास)**	**झारखण्ड झरोखा**	2017
23.	**मिश्र, डॉ० शुकुन्तला**	**शहनाई (नागपुरी रेडियो नाटक संकलन)**	**झारखण्ड झरोखा**	2021
24.	**मिश्र, डॉ० शुकुन्तला**	**नागपुरी कर आधुनिक झारखण्ड साहित्यकार**	**झारखण्ड झरोखा**	2021
25.	**साहू, डॉ० कृष्ण प्रसाद**	**फुलसुंदरी (नागपुरी निबंध संकलन)**	**श्रीमती प्रमिला साहू, सिसई**	2000

पत्र पत्रिकाओं की सूचीः-

क्र० सं०	**पत्र-पत्रिकाएँ**	**लेखक/प्रकाशन**
1.	**जय झारखण्ड**	**डॉ० विसेश्वर प्रसाद केशरी**
2.	**गोतिया**	**डॉ० बीरेन्द्र कुमार महतो**
3.	**आदिवासी**	**बिहारी सरकार, राँची**
4.	**अखड़ा**	**राँची**
5.	**नागपुरी**	**नागपुरी भाषा परिषद् राँची**
6.	**सहिया**	**एम.जी.टावर, 23 पूर्वी जेल रोड, राँची**
7.	**डहर**	**छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ**
8.	**राँची एक्सप्रेस**	**अपर बाजार, राँची**
9.	**संगम पत्रिका**	**योगेन्द्रनाथ तिवारी (संस्थापक संपादक), नागपुरिया, कला संगम, राँची**
10.	**जोहार दिसुम**	**राँची**
11.	**पझरा**	**प्र० सम्पादक लाल रणजियनाथ शाहदेव, नागपुरी, प्रचारिणी सभा, राँची**
12.	**शंखनाद**	**राम जीत सेनापति, नागपुरिया संघ, सिमडेगा**
13.	**जोहार सहिया**	**अश्विनी कुमार पंकज**
14.	**हिन्दी पत्र पत्रिकाएँ**	
15.	**छोटानागपुर एक्सप्रेस**	**डॉ. बीरेन्द्र कुमार महतो**